© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 01 | January - March 2023

''नरेन्द्र मोदी के प्रधानमन्त्री काल में हिन्दूस्तान–इजराईल के राजनीति सम्बन्ध''

डॉ0 दर्शना देवी, सहायक प्राध्यापिका (राजनीतिशास्त्र),
साऊथ पुआइण्ट डिग्री कॉलेज, रतनगढ़– बागडू , सोनीपत।

शोधसार आलेख :–

इस शोध पत्र में हिन्दूस्तान–इजराईल सम्बन्धों की पृष्टभूमि, दोनों देशों के मध्य सहयोग, हिन्दूस्तान की डी हाईफ्रनेशन कूटनीति, सामरिक भागीदारी, मुक्त व्यापार समझौते को लेकर इजराईल के विचार तथा कोरोना वायरस के समय हिन्दूस्तान से प्रेरित इजराईल 'नो कोन्टक्ल पॉलिसी (No contract Policy) पर विचार विमर्श किया गया है।

मुख्य शब्द :– राजनयिक, उदगार, अल्पसंख्यक, साम्राज्य, वाणिज्य, ऐतिहासिक, परिस्थितियाँ, संघर्ष।

'' हिन्दूस्तान और इजराईल ने अपने राजनयिक सम्बन्धों के तीस वर्ष 29 जनवरी, 2022 को पूरे कर लिए।[1] हिन्दूस्तान ने इजराईल को एक राष्ट्र के रूप में मान्यता तो 17 सितम्बर, 1950 को ही दे दी थी, लेकिन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के कारण पूर्ण राजनयिक सम्बन्ध 17 सितम्बर, 1992 को स्थापित किए।[2]

तीस वर्ष के इस राजनीतिक सम्बन्धी की यात्रा पर इजराईल के प्रधानमन्त्री नफताली बेनेट ने एक विडियो जारी कर अपने उद्‌गार व्यक्त किए तथा हिन्दूस्तान व इजराईल की मित्रता को 'गहरी दोस्ती' कहा तथा इस गहरी दोस्ती को और सुदृढ़ होते जाने की कामना की उनके अनुसार हमारे दोनों देशों के आकार में विभिन्नता है, लेकिन हमारे बीच ऐतिहासिक विरासत, लोगों का प्यार और तकनीकी आविष्कार समान हैं इन तीस वर्षो में दोनों देशों के बीच शानदार सहभागिता, गहरा सांस्कृतिक सम्बन्ध एवं सैन्य एवं आर्थिक सहयोग रहा है, हम दोनों साथ मिलकर महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करेगें।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी राजनयिक सम्बन्धों के 30 वर्ष पूरे होने पर कहा कि हिन्दूस्तान व इजराईल के सम्बन्ध प्राचीन समय से हैं। यहूदी बिना किसी भेदभाव के हिन्दूस्तान में लम्बे समय से रह रहे हैं तथा देशों के सम्बन्धों में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।''

इजराईल का निर्माण :–

इजराईल :–

इजराईल दक्षिणी पश्चिमी एशिया में एक छोटा सा देश है। यह दक्षिण–पूर्व भूमध्य सागर के पूर्वी छोर पर स्थित हैं। इसके उत्तर में लेबनान, पूर्व में सीरिया और जार्बुन तथा दक्षिण पश्चिम में मिश्र है।

इजराईल यहूदियों का मूल स्थान है, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध से पहले यह पूरा क्षेत्र–फिलिस्तीन, सीरिया, जेरूसेलम और ऑटोमन साम्राज्य के अधीन था तथा फिलिस्तीन क्षेत्र में अधिकाशतः अरब मुस्लिम तथा ईसाई, ड्रूजे (Druze), सिरकासियन्स (Circassians) और यहूदी अल्पसंख्या में निवास करते थे, उस समय में अधिकांश यहूदी (Jews) फिलिस्तीन के क्षेत्र से बाहर पूरी दुनिया में विशेष रूप से पूर्वी एवं मध्य यूरोप, अमेरीका, मध्य–पूर्व आदि में निवास करते थे। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फिलिस्तीन से विशेष रूप से यूरोप व मध्य–पूर्व में रहने

वाले यहूदियों में इस भावना का विकास हुआ कि यहूदियों को अपने मूल स्थान इजराईल जाकर बसना चाहिए तथा यहूदियों के लिए अपना एक राष्ट्र होना चाहिए, इस भावना को विभिन्न देशों में यहूदियों के विरूद्ध हो रहे दुर्व्यहार ने और दृढ़ किया जिसके परिणामस्वरूप जियोनिस्ट (Zionist) आन्दोलन 1897 में प्रारम्भ हुआ।[3]

जियोनिस्ट आन्दोलन का उद्धेश्य था, यहूदियों के लिए उनके ऐतिहासिक मूल स्थान इजराईल में राष्ट्र की स्थापना करना तथा अधिकाशं यहूदियों को वहाँ लाकर बसाना। इस आन्दोलन के फलस्वरूप यहूदियों ने वहाँ जमीन खरीदकर बसना प्रारम्भ कर दिया, इसके प्रतिक्रिया स्वरूप वहाँ रह रहे अरब मुस्लिमों से विरोध प्रारम्भ हुआ, जो बाद में अरब–इजराईल में संघर्ष के रूप में विकसित हुआ।

प्रथम विश्व युद्ध के समय यहूदियों के ऊपर किए अत्याचार के कारण यहूदियों की संख्या फिलिस्तीन में तेजी से बढ़ती चली गई।

अरब मुस्लिम और यहूदियों में संघर्ष चलता रहा तथा अनेक प्रस्ताव/समझौते भी अस्तित्व में आते रहे अन्ततः प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् सन् 1919 की पेरिस शांति समझौते और वार्साय की संधि के द्वारा टर्की के साम्राज्य का अंत हो गया तथा अप्रैल 1920 में ब्रिटेन को फिलिस्तीन और ट्रांस जॉर्डन, जिसमें वर्तमान इजराईल, जॉर्डन, वेस्ट बैंक और गाजा स्ट्रिप सम्मिलित है, का मेंडेट (Mandates) प्राप्त हो गया अर्थात् शासन करने का अधिकार मिल गया।[4] द्वितीय विश्व युद्ध तक अरब राष्ट्रवाद और यहूदी राष्ट्रवाद अत्याधिक प्रखर हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अन्नततः संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 15 मई, 1949 को फिलिस्तीन पर गठित विशेष समिति द्वारा दी गई रिपोर्ट को जनरल असेम्बली ने 29 नवम्बर, 1947 को स्वीकार कर लिया, जिसके द्वारा 1 सितम्बर, 1947 से दो वर्ष के संक्रमण काल के लिए उस समय की क्षेत्रीय सीमाओं को मानते हुए एक अरब राष्ट्र, एक यहूदी राष्ट्र तथा सिटी ऑफ जेरूसेलम का गठन स्वीकार कर लिया, सिटी ऑफ जेरूसेलम बेथलहेम के साथ संयुक्त राष्ट्र के अधीन रखा गया, इस प्रस्ताव को दोनों ही पक्षों ने विरोध किया। संयुक्त राष्ट्र सभा ने दो राष्ट्रों एवं एक विशेष शहरी क्षेत्र की स्थापना को 1 अक्टूबर, 1948 तक करने की सीमा निर्धारित कर दी, 14 मई, 1948 को यहूदी राज्य इजराईल की स्थापना की घोषणा कर दी गई।

इजराईल व हिन्दूस्तान सम्बन्ध (सन् 1948 से 1991 तक) :–

1) 1948–1950 – इजरायल की स्थापना को थ्हन्दूस्तान की तत्कालीन नई सरकार ने मान्यता प्रदान नहीं की। थ्हन्दूस्तान ने इजरायल को संयुक्त राष्ट्र संघ का 1949 में सदस्य बनाने वाले प्रस्ताव पर भी इजरायल के विरूद्ध मत दिया।

2) 1950–1991 – थ्हन्दूस्तान ने 17 सितम्बर, 1950 को इजरायल को राज्य के रूप में मान्यता प्रदान कर दी।[5] लेकिन पूर्ण राजनयिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किए, इसके पीछे हिन्दूस्तान सरकार की हिन्दूस्तान में रह रहे मुस्लिम और अरब देशों के प्रति तुष्टिकरण की नीति थी। सरकार का समर्थन फिलिस्तीन के प्रति अधिक था, लेकिन इजराईल भी एक यथार्थ था। अतः हिन्दूस्तान सरकार इजराईल के प्रति समर्थन मात्र राजनीतिक औपचारिकता थी।

हिन्दूस्तान सरकार ने इजराइल को बम्बई (मुम्बई) में अपना वाणिज्यिक दूतावास खोलने की अनुमति 1953 में प्रदान कर दी, लेकिन नई दिल्ली में पूर्ण दूतावास खोलने की स्वीकृति नहीं दी।

हिन्दूस्तान की इजराईल के प्रति इस प्रकार के सम्बन्धों का कारण तत्कालीन परिस्थितियँ थी जैसे :–

- हिन्दूस्तान भी तभी स्वतंत्र हुआ था तथा धर्म के आधार पर पाकिस्तान के विभाजन के बाद बना था, जिसके कारण जो मुस्लिम हिन्दूस्तान में रह गए थे उनका विश्वास जीतना था तथा उन्हें यह विश्वास दिलाना था कि सरकार उनके साथ है और वे हिन्दूस्तान में सुरक्षित हैं।
- मुस्लिम समुदाय को कांग्रेस अपना वोट बैंक बनाकर रखना चाहती थी। अतः सभी मंचों पर मुस्लिम समर्थक नीति अपनाई गई।
- हिन्दूस्तान एक नव–उदित राष्ट्र था, जिसकी विकास मार्ग में अनेक आवश्यकताएं थी जिसमें सबसे बड़ी आवश्यकता पेट्रोलियम उत्पाद थे, जो अधिकाशतः अरब राष्ट्रों से प्राप्त होते थे।
- हिन्दूस्तान का समर्थन फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन (PLO) के प्रति खुले रूप से था। अतः इजराईल के प्रति समर्थन न होना स्वामित्व था।
- हिन्दूस्तान को यह भी देखना था कि अरब राष्ट्र पाकिस्तान के साथ न हो जाएं अतः अरब राष्ट्रों का समर्थन प्राप्त करना हिन्दूस्तान के लिए तर्क संगत था।
- हिन्दूस्तान के इजराईल के प्रति इस अमित्रता पूर्ण व्यवहार के बाद भी इजराईल ने सन् 1947 के हिन्दूस्तान–पाक युद्ध में हिन्दूस्तान का समर्थन किया।[6]

हिन्दूस्तान–इजराईल सम्बन्ध सन् 1992 से सन् 2014 तक

सन् 1992 से हिन्दूस्तान और इजराईल सम्बन्धों में परस्पर आपसी आपार समझ एवं सहभागिता में वृद्धि होती चली गई। सन् 1999 में इजराईल ने पाकिस्तान के साथ हिन्दूस्तान के कारगिल युद्ध में हिन्दूस्तान का समर्थन भी किया और युद्धक हथियार एवं सामग्री भी प्रदान की। इजराईल ने 2001 में हिन्दूस्तान में आए भूकम्प में राहत सामग्री भी उपलब्ध कराई।

हिन्दूस्तान–इजराईल के मध्य नई तकनीक, सुरक्षा, रक्षा तथा आतंकवाद को लेकर अनेक समझौते/सौदे होते रहे, जिसमें दोनों के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुए। 17 अक्तूबर, 2021 को हिन्दूस्तान के पहले विदेश मंत्री जयशंकर ने इजराईल की यात्रा की थी।

नवम्बर 2011 में हिन्दूस्तान की एलीट कमांडो यूनिट के लिए 1000 से अधिक X-95 एसॉल्ट राइफल खरीदी गई। सन् 2005 में हिन्दूस्तान ने इजराईल से चार फाल्कन अवाक्स (AWACS) विमान खरीदने के लिए ऑर्डर किए सन् 2012 में दोनों राष्ट्रों ने अपराधियों एवं कैदियों के परस्पर आदान–प्रदान के लिए एक्सट्राडिशन संधि सम्पन्न की तथा आतंकवाद से लड़ने में परस्पर सहयोग के लिए सहयोग किया।

हिन्दूस्तान के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सन् 2014 से हिन्दूस्तान–इजराईल सम्बन्ध :–

अक्तूबर, 2015 के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने इजराईल की तथा नवम्बर 2016 में इजराईली राष्ट्रपति रियूवेन रिवलिन (Reuven Rivlin) ने हिन्दूस्तान की यात्रा की।[7]

हिन्दूस्तान के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने जुलाई 2017 में इजराईल की यात्रा की। प्रधानमंत्री इजराईल यात्रा करने वाले पहले प्रधानमंत्री हैं।[8] प्रधानमंत्री मोदी ने इजराईल के प्रति हिन्दूस्तान की मित्रता को महत्त्व देते हुए इजरायल फॉर इंडिया, इंडिया फॉर इजरायल[9] का वक्तव्य दिया, इजराईल के तत्कालीन प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने प्रधानमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा भरत अपना 'दोस्त' कहकर पुकारा।

इस ऐतिहासिक यात्रा के समय सात समझौते दोनों राष्ट्रों के मध्य सम्पन्न हुए, यह समझौते अंतरिक्ष, जल–प्रबन्धन, ऊर्जा, कृषि सुरक्षा तकनीक आदि क्षेत्रों में किए गए 40 मिलियन डॉलर का इंडिया–इजराईल इंडस्ट्रीयल रिसर्च एण्ड्डेवलपमेंट और टेक्नीकल इन्वोगेशन फंड़ की स्थापना के लिए सहमति बनी। इजरायल में एक हिन्दूस्तानीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की गई।[10]

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यह इजराईल यात्रा ऐतिहासिक थी, क्योंकि वह पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने फिलिस्तीन को अधिक महत्व न देते हुए इजराईल की यात्रा भी की और दोस्ती को सुदृढ़ करने की ओर पहल की।

इजराईल के तत्कालीन प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू ने जनवरी 2018 में थ्हन्दूस्तान की यात्रा की तथा साइबर सुरक्षा, तेल एवं गैस सहयोग, फिल्म सह–निर्माण, वायु परिवहन पर चार समझोते तथा अन्य पाँच समझौते दोनों राष्ट्रों के मध्य सम्पन्न हुए।

सन् 2014 से अब तक हिन्दूस्तान और इजराईल के मध्य सम्बन्ध मधुर बने हुए हैं व्यापार एवं तकनीकी एवं रक्षा सहयोग में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

आर्थिक और वाणिज्यिक सम्बन्ध :–

हिन्दूस्तान इजराईल का एशिया में तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, यह व्यापार फार्मा, कृषि, आईटी और टेलीकॉम, आंतरिक सुरक्षा आदि क्षेत्र में हो रहा है, हिन्दूस्तान से इजराईल द्वारा आयात की जाने वाली वस्तुओं में प्रमुख रूप से, रसायन, धातु मशीनें, परिवहन से सम्बन्धित तथा पोटाश सम्मिलित हैं।

रक्षा उत्पादों को छोड़कर हिन्दूस्तान–इजराईल के मध्य व्यापार सन् 1992 में 200 मिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2016 में 1.15 मिलियन तक पहुंच गया था।

निवेश –

हिन्दूस्तान की टीसीएस, टेक महिन्द्रा, विप्रो, इन्फोसिस, जैन इर्रीगेशन, लोहिया ग्रुप आदि कम्पनियों ने इजराईल में निवेश कर व्यापार प्रारम्भ कर दिया हैं। इस प्रकार इजराईल की 300 से अधिक कम्पनियों ने हिन्दूस्तान में कृषि जल–तकनीक रसायन, अनुसंधान आदि क्षेत्र में निवेश कर व्यापार प्रारम्भ कर दिया है।

कृषि –

हिन्दूस्तान इजराईल द्वारा विकसित कृषि क्षेत्र में नई तकनीक का लाभ प्राप्त कर रहा है। इजराईल की सिंचाई की ड्रिप इरींगेशन को हिन्दूस्तान में व्यापक रूप से प्रयोग किया जा रहा है, इसके अतिरिक्त हॉर्टीकल्चर सुरक्षित, कल्टीवेशन, आर्चर्ड एवं कैनोपी मैनेजमेंट, नर्सरी प्रबंधन माइक्रो–इर्रीगेशन तथा पोस्ट हार्वेस्ट प्रबन्धन में भी इजराईल तकनीक का प्रयोग थ्हन्दूस्तान में किया जा रहा है। मुख्य रूप से हरियाणा व महाराष्ट्र मे ंकाफी उपयोगी सिद्ध हो रही है।

रक्षा व सुरक्षा :–

फरवरी सन् 2014 में हिन्दूस्तान व इजराईल ने तीन महत्वपूर्ण समझौते–क्रिमिनल मामलों में कानूनी सहायता, मातृभूमि की सुरक्षा और वगीकृत मामलों के सम्बन्ध में किए थे।[11] इसके बाद से इस क्षेत्र में प्रगति होती रही है, दोनों देशों के रक्षा सचिव सेनाध्यक्ष आदि एक–दूसरे से यहाँ की यात्राएं करते रहे हैं, आंतकवाद से लड़ने के लिए एक जाइंट वर्किंग ग्रुप भी कार्य कर रहा है।

अंतरिक्ष –

जुलाई 2017 प्रधानमंत्री की इजराईल यात्रा के समय इसरो (ISRO) तथा इजराइल की स्पेस एजेंसी के मध्य परस्पर सहयोग के तीन समझौते सम्पन्न हुए थे। इसरों ने पीएसएलवीसी 48 द्वारा इजराईल के विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया, सैटेलाईट (Dychifat-3) दिसम्बर 2019 में प्रक्षेपित किया।

शिक्षा –

सन् 2012 से इजराईल हिन्दूस्तानीय विद्यार्थियों के लिए पोस्ट–डॉक्टरल स्कॉलरशिप प्रदान कर रहा है, लगभग 550 हिन्दूस्तानीय विद्यार्थी वहाँ अध्ययन कर रहे हैं, हिन्दूस्तान भी आई सी सी आर (ICCR) की स्कॉलरशिप इजरायली विद्यार्थियों को प्रदान करता है दोनों देशों की यूनिवर्सिटीज ने परस्पर सहयोग समझौते भी किए हैं।

लगभग 14000 हिन्दूस्तानी नागरिक इजराईल में विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

कोविड–19 के समय सहयोग –

कोविड–19 महामारी से संसार में ठहराव सा आ गया था। परन्तु दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सम्बन्धों की गति धीम नहीं हुई। जून, 2019 में हिन्दूस्तान ने अपने रूख में परिवर्तन करते हुये संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद में इजराईल के एक प्रस्ताव का समर्थन किया था।

दिसम्बर 2020 में हिन्दूस्तान व इजर्राल ने स्वास्थ्य एवं मेडीसन के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए समझौता किया। दोनों देशों ने कोविड–19 की रैपिड टेस्टिंग किट बनाने के लिए साथ कार्य किया। मार्च, 2021 में हिन्दूस्तान की बायोटेक तथा इजराईल की ओरामेड (Oramed) ने कोविड–19 की ओरल वैक्सीन बनाने के लिए समझौता किया। इजराईल ने हिन्दूस्तान को 60 वेंटीलेटर्स सहित अन्य चिकित्सा उपकरण प्रदान किए। हिन्दूस्तान ने इजराईल को दवाएं तथा 50,000 मास्क भेजे।

हिन्दूस्तान–इजराईल के सम्बन्ध निरन्तर सुदृढ़ होते जा रहे हैं। नए–नए क्षेत्रों में परस्पर सहयोग के लिए समझौते हो रहे हैं। जिससे दोनों ही राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर हैं।

संदर्भ सूची

1. The Tripline - 30 जनवरी, 2022
2. The Hindustan – 18 सितम्बर, 1992

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 01 | January - March 2023

3. जियोनिष्ट आन्दोलन –1097
4. प्रेरिस शान्ति समझौता 1919
5. Times of India – 18 Sept., 1950
6. The Jerusalem post 18 Oct., 2017
7. इजराईल के राष्ट्रपति की नवम्बर 2016 में थ्हन्दूस्तान यात्रा।
8. हिन्दूस्तान के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की इजराईल यात्रा, जुलाई 2017 –
9. The Times of India 7 July, 2017.
10. 7th July, 2018 – India Express.
11. फरवरी, 2014 में तीन समझौते।